गतिविधियों के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों को सीखना

अंकित शुक्ला

एक लोकतंत्र में, किसी नागरिक का सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण काम होता है नागरिकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक नागरिक पर सरकार का चयन करने की ज़िम्मेदारी होती है और इस अधिकार का प्रयोग करने के लिए व्यक्ति में निर्णय-क्षमता का होना ज़रूरी है। शिक्षा, इस क्षमता को विकसित करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके द्वारा हमें स्पष्ट रूप से सोचने और नए विचारों को समझने की क्षमता का विकास करने में मदद मिलती है।

एक आदर्श और विवेकशील सार्वजनिक संवाद के लिए सभी नागरिकों के हितों, सभी के पास प्रासंगिक जानकारी की उपलब्धता और सुविकसित समीक्षात्मक चिन्तन-क्षमता का होना ज़रूरी है। शिक्षा का उद्देश्य है नागरिकों में इस समालोचनात्मक चिन्तन की क्षमता को विकसित करना जहाँ प्रत्येक नागरिक विवेक के आधार पर अपने निर्णय ले सके, बौद्धिक अखण्डता को समझ सके और साथ ही पक्षपात और कट्टरपन्थ को अस्वीकार कर, झूठ से सच्चाई, प्रचार से तथ्य, को अलग कर सके। एक शिक्षित मस्तिष्क वैज्ञानिक स्वभाव का होता है जो तथ्य आधारित परिणामों पर विश्वास रखता है। उसके पास नए विचारों को ग्रहण करने और उन्हें समझने की क्षमता होती है।

गतिविधि 1 : स्थिति-विश्लेषण और सभी की भलाई

एक स्कूल में मुझे आमंत्रित किया गया था। लोकतंत्र और नागरिकता की मेरी समझ के आधार पर मैंने वहाँ एक गतिविधि की। शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ चर्चा करने के बाद, संवैधानिक मूल्यों पर भाषण देने के बजाय, मैंने बुनियादी बातों को समझने में मदद करने के लिए विद्यार्थियों के सामने एक गतिविधि प्रस्तावित की। मैंने उन्हें कुछ प्रश्न दिए, जिनमें से दो पर यहाँ चर्चा की गई है। विद्यार्थियों को प्रश्नों का विश्लेषण कर उनका जवाब देना था।

स्थिति 1 : मान लीजिए कि आस-पास के पाँच गाँवों के तीन सौ किसान परिवारों को पानी उपलब्ध कराने के लिए एक जगह सार्वजनिक ट्यूबवेल है। आप पानी के नियोजन और वितरण के लिए क्या इन्तज़ाम करेंगे ताकि सभी किसान परिवारों को सिंचाई का लाभ मिल सके?

स्थिति 2 : आप अपने गाँव का सरपंच किसको चुनेंगे?

विद्यार्थियों ने अपने-अपने समूहों में इन सवालों पर काम किया और अपने उत्तर को बड़े समूह के सामने प्रस्तुत किया। एक समूह द्वारा उपरोक्त स्थितियों पर साझा किए गए विचार इस प्रकार थे :

उत्तर 1 : हम कुओं, झीलों और जल-भण्डारण के अन्य साधनों की खुदाई करेंगे और पानी के भण्डारण के लिए ट्यूबवेल का उपयोग करेंगे। चाहे अमीर हो या ग़रीब, एक संसाधन के रूप में पानी को सभी के बीच ठीक से वितरित किया जाएगा।

उत्तर 2 : सरपंच के लिए मतदान : गाँव में लोगों द्वारा किए गए काम या गाँव के लिए ज़रूरी कामों को करने के वादों के आधार पर वह सरपंच का चयन करेंगे।

गतिविधि 2 : सभी का कल्याण

लोकतंत्र, लोकहित के विचार पर आधारित है, अर्थात सभी नागरिकों के सामान्य हितों को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। यह वैचारिक स्तर पर सम्भव है कि जब भी कोई निर्णय लिया जाए तब लोगों के सामान्य हितों को ज़रूर सुनिश्चित किया जाए। लेकिन यह व्यवहार में तब्दील हो इसे सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों और कर्तव्यों की समझ होनी चाहिए। हमें कम उम्र में ही बच्चों में नागरिकता के बीज बोने की कोशिश करनी चाहिए। मुझे इसका एहसास बच्चों के साथ *हैरी पॉटर* और *पारस का पत्थर* फ़िल्म देखने के बाद उनसे हुई बातचीत के ज़रिए हुआ। फ़िल्म देखने के बाद मैंने उनसे एक साधारण-सा सवाल पूछा। 'अगर आपको हैरी पॉटर की तरह शक्तियाँ मिलती हैं तो आप क्या करेंगे?'

बच्चों के जवाब अलग-अलग थे। शुरुआत में ज़्यादातर जवाब थे कि वे खूब सारे पैसे इकट्ठा कर अमीर बनेंगे। उनकी आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए यह बात स्वाभाविक लगती है। हम हमेशा उन चीज़ों के बारे में सोचते हैं जो हमारे पास नहीं है और ज़्यादा पैसे पाने की इच्छा उनके लिए एक स्वाभाविक चुनाव है क्योंकि उनका सोचना है कि धन उनके दैनिक जीवन की ज़्यादातर परेशानियों को दूर कर सकता है। लेकिन थोड़ी और बात करने पर हमने पाया कि वे केवल अपने लिए नहीं बल्कि अपने गाँव व आस-पास के लोगों के कल्याण के लिए धन चाहते हैं। यह बात मेरे मन को छू गई।

यहाँ उनकी कुछ प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं :

- गाँव की सफ़ाई
- सभी को पानी उपलब्ध कराना
- एक महल बनाना
- पैसे कमा के सरकार को देना जो इन पैसों को फिर ग़रीबों को देगी
- एक जादुई बस बनाना जिससे लोग मुफ़्त में यात्रा कर सकें

विद्यार्थियों में सहयोग की भावना का विकास और इसे व्यवहार में तब्दील करने के मौक़े विद्यालय में बनाए जाने चाहिए। लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास रातों-रात नहीं हो सकता। इसके लिए शिक्षकों द्वारा निरन्तर प्रयास और कड़ी मेहनत की ज़रूरत है। हमें हमारे बच्चों के दिलो-दिमाग़ में सामाजिक न्याय के प्रति जुनून एवं सामाजिक बुराइयों और शोषण के प्रति संवेदनशीलता की ज्योत जलानी चाहिए और इस बदलाव की बुनियाद विद्यालय में ही रखी जानी चाहिए।

References

Deliberative Democracy and Education by Rohit Dhankar

Aims of Secondary Education (Secondary Commission Education 1952-53 Report)

अंकित शुक्ला 2017 में फेलो के रूप में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े। उन्होंने एमबीए एवं बीटेक किया है। वर्तमान में वे रायगढ़ ब्लॉक (छत्तीसगढ़) में कार्यरत हैं और गणित विषय से जुड़े हुए हैं। इससे पहले, उन्होंने भटिंडा में कार्यक्रम प्रबन्धक और भारत के तीन राज्यों में जागरण पहल के जिला परियोजना समन्वयक के रूप में काम किया है। उनसे ankit.shukla@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

बच्चों को अपने बिल्कुल नज़दीक के दायरे की स्थितियों से निपटने के दौरान कुछ विकल्पों का चुनाव करना होता है। उन्हें सबसे अधिक प्रभावित करने वाले उनके बिल्कुल निकट के दायरे में उनका ध्यान रखने वाले लोग, उनके प्रति उदासीन रहने वाले और उनके साथ हेर-फेर करने वाले या उनका फ़ायदा उठाने वाले लोग भी हो सकते हैं। एक बच्चे को इनके बीच अन्तर करना और प्रत्येक को उचित प्रतिक्रिया देना सीखना होता है।

- हृदय कान्त दीवान, नागरिकता के आदर्श, पेज 11